भी अफसर अपने पर जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं है इसलिये एफ०आई०आर० को रद्द कर दिया जाये लेकिन मेट्रो-पोलिटिन मजिस्ट्रेट जे०पी० शर्मा को इस रिपोर्ट पर संदेह हुआ और उन्होंने इस दरख्वास्त को रद्द करके पूरी इन्वैस्टि-गेशन करने का हुक्म दिया। उनका ख्याल था कि बहुत बड़े अफसर इस मामले में इन्वाल्व हैं इसलिये इस मामले को रद्द करने की कोशिश की जा रही है। मजिस्ट्रेट ने यह हुक्म लंबी सुनवाई के बाद 13 मई, 1992 को दिया। जानकार हलकों के मुताबिक इस मामले में कई बड़े अफसरों के फंसने की जबर-दस्त गुंजाइश है। इसलिये मामले को रफा-दफा करने की कोशिश की जा रही है।

महोदया, यह बेशकीमती झंडा रेजीमेंट के सिल्वर रूम से गायब हुआ जहां बेहद कीमती और महत्वपूर्ण सामान रखा जाता है। केन्द्रीय जांच ब्यूरो ने एक बार फिर 30 नवम्बर, 1992 को इस एफ०आई०आर० को रद्द करने की दरख्वास्त की। इस बार भी अदालत ने उसे नामंजूर कर दिया और जबरदस्त झाड़ देकर कहा कि इस बेशकीमती और कौमी निशान के झंडे को हर हालत में छानबीन करके बरामद किया जाये। कुछ अधिकारियों ने जबानी तौर पर कहा कि झंडा उन्होंने 1966 में देखा। हैड क्लर्क और ऑनरेरी कैप्टन अनूप सिंह ने जांच ब्यूरो को बताया कि तब के डिप्टी कमांडर जसवन्त सिंह ने उन्हें सिल्वर रूम से झंडा निकालने का जुबानी आदेश दिया था। चूंकि वे उनके सीनियर अफसर थे, इसलिए उन्होंने झंडे को निकालने की जरूरत के बारे में वजह नहीं पूछी। कुछ दिए बाद जब झंडा वापस नहीं आया तो पूछने पर डिप्टी कमांडर जसवन्त सिंह ने बताया कि झंडा कुछ फट गया था इसलिये ठीक करने लिये दर्जी के पास भेजा गया है। इसके बाद से लेकर आज तक इस मामले में कोई खास तरक्की नहीं हुई है और बहुत लोगों का ख्याल कि उनके बहुत बड़े अफसर इसमें इन्वाल्व हैं? इसलिए इस मामले को दबाने की कोशिश की जा रही है।

स स्पेशल मैंशन के माध्यम से मैं सरकार से अर्ज करना चाहता हूं कि जो जिंदा कौमें हैं, वह अपने निशान को, अपनी विरासत को संभालकर रखने की कोशिश करती हैं और अंग्रेज आज भी उनका कोई कौमी निशान, कोई तारीखी निशान हिन्दुस्तान में हो तो ले जाने की कोशिश करते हैं। जैसे हमने बहुत सी तारीखी विरासत वाली चीजें इंग्लैंड से वापस मंगाई हैं, जैसे सिक्ख गुरुओं के शस्त्र और कोहिनूर आदि, इसी तरीके से यह झंडा हमारी जो 1857 की आजादी की जंग थी, उसका एक बेशकीमती निशान है, रानी लक्ष्मीबाई का झंडा बेशकीमती निशान है। इसलिये इसकी तलाश में रिगरस तौर पर इन्वेस्टीगेशन होनी चाहिये, यह मेरी आपके मार्फत सरकार से दरख्वास्त है। धन्यवाद।

Agitation by joint action committee of KVS association of Employees

श्री शिव चरण सिंह (राजस्थान) : डिप्टी चेयरमैन महोदया, मैं आपके माध्यम से एक गंभीर मसले की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। ज्वाइंट एक्शन कमेटी केन्द्रीय विद्यालय एसोसिएशन और सरकार के बीच काफी अरसे से झगड़े चल रहे हैं। केन्द्रीय विद्यालय संगठन के जो अध्यापक हैं और दूसरे जो वर्ग के कर्मचारी हैं, उनकी कुछ मांगें हैं, जिनको सरकार मान नहीं रही है। अभी उन्होंने हंगर स्ट्राईक का नोटिस दिया है उनकी जो ऐसोसि-एशन है, उसकी तरफ से और वह हंगर स्ट्राईक के माध्यम से अपनी कार्रवाई शुरू करना चाहते हैं।

मैं आपके माध्यम से निवेदन करना चाहता हूं कि मानव संसाधन विकास मंत्री को इस मामले में बीच में पड़कर केन्द्रीय विद्यालयों के अध्यापकों और दूसरे कर्मचारियों की जो उचित मांगें हैं, उनको तत्काल मान लेना चाहिये जिससे यह स्टेज न आये क्योंकि शुरू में तो ये लोग ऐसोसिएशन के माध्यम से, छोटी-छोटी मांगों के माध्यम से उनको एनकरेज कर देते हैं और बाद

में परिस्थिति खराब हो जाती है। अगर वे हंगर स्ट्राईक पर गये तो केन्द्रीय विद्यालयों के जितने विद्यार्थी हैं, उनकी पढ़ाई का नुकसान होगा, ऐक्जामिनेशन हो रहे होंगे तो उनमें व्यवधान पड़ेगा। इसलिये आपके माध्यम से मैं निवेदन करना चाहता हूं कि उनके जितने पैंडिंग मामलात हैं, उन सबको केन्द्रीय सरकार को तत्काल निपटा देना चाहिये और उनसे बातचीत के द्वारा उनकी सारी मांगों को निपटाने की कोशिश करनी चाहिये। धन्यवाद।

---

1. **THE BUDGET (RAILWAYS) 1994-95,**

2. **RESOLUTION APPROVING RECOMMENDATIONS IN PARAS 27, 28, 29, 30, 31 AND 34 OF FIFTH REPORT OF RAILWAY CONVENTION COMMITTEE, 1991,**

3. **THE APPROPRIATION (RAILWAYS) NO. 2 BILL, 1994**

AND

4. **THE APPROPRIATION (RAILWAYS) NO. 3 BILL, 1994**—Contd.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Now we will take up the discussion on the Railways.

Before we start the discussion, I would request the Member that they should abide by the time allotted to their parties so that, if we can finish the discussion today, we can have the reply tomorrow. If it is possible, we will finish it today.

THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF PARLIAMENTARY AFFAIRS (SHRI RAMESHWAR THAKUR): Madam the hon. Railway Minister has a question.

THE DEPUTY CHAIRMAN: Do you want to reply today?

THE MINISTER OF RAILWAYS (SHRI C. K. JAFFER SHARIEF) Yes, Madam, today. I will be much obliged if I can be permitted to reply today, if the business can be finished today.

SHRI SHANKAR DAYAL SINGH (Bihar) : Madam, you fix the time ?

THE DEPUTY CHAIRMAN: I am fixing the time . We have got five hours for the discussion including the Minister's reply. So, it is five hours from now. If you don't want to go for lunch, we can sit through the lunch hour. We should not delay the train.....(*Interruptions*)

SHRI H. HANUMANTHAPPA (Karnataka): Madam, Deputy Chairman, the way in which the discussion is going on, it may not take much more time. The Railway Minister is travelling very safely across the discussion. I am observing since yesterday that the Railway Minister is travelling across the discussion very safely.

THE DEPUTY CHAIRMAN: We hope there will be no accident.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: I heard Mr. Shankar Dayal Singh's speech also yesterday.

THE DEPUTY CHAIRMAN : We want no accidents, no chain-pullings and no obstructions. So, you can go ahead.

SHRI H. HANUMANTHAPPA: Madam, before I start, I will say that somebody asked me whether I was going to praise Mr. Jaffer Sharief. I said, "Everybody else has praised him. Why should I also praise him?" He said, "Everybody has put something. You also give him a rose." This is the nature of the discussion. Even Sunder Singh Bhandariji who has initiated the discussion, also came out with suggestions. Actually, by and large, the Railway Minister has mesmerised everybody, including the CPI (M) Members.